कुछ पंक्तियां इस प्रकार से है

प्रदीप कुमार कुलश्रेष्ठ
निजी सचिव, महाप्रबन्धक (परिकल्प-सिविल)
टिहरी हाइड्रो डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड
ऋषिकेश-249201 जिला देहरादून, उत्तराखण्ड

मैं लिखता हूं जब भी कुछ तुम्हें
तब होता हूं ऐसी दुनियां में
रोकना चाहता हूं गति समय की
चाहता है जीवन रूक जाये यहीं पर।
पर जीवन रूकता नहीं.... और समय
बंद मुट्ठी से रेत की तरह फिसल जाता है।

पतित पावनी मुक्ति दायिनी,
आज स्वयं ही व्यथित है।
देख अस्तित्व खतरे में अपना,
इस पीड़ा से कुंठित है।

दुल्हन से सजती थी वादियां,
अब लगती है बेवा।
पुनर्वास में संचित धन भी,
पच गया समझकर मेवा।

निज स्वार्थ के लिए मानव ने,
कर दोहन इन महोषधि का।
प्रशासन की भ्रष्ट नीति से,
हुआ क्षय अनमोल निधि का।

मल के मूत्र से स्वार्थ के सूत्र से,
मलिन हो गयी गंगा पावन।
प्रदूषण के महादैत्य से,
भयभीत दीख रहा सावन।

तपन से भयभीत हिमानी,
पीछे को जा रही है भाग।
हिमगिरि के हिम-खण्डों पर,
चारों तरफ लगी है आग।

****